श्री राधिका रंजन सुशील

कविता

गीत-विशेषांक

39

जनवरी, 2009

सम्पादक : जगन्नाथ

कविता

(भोजपुरी कविता के पहिल त्रैमासिक)

वर्ष–10 अंक–3 जनवरी, 2009

सम्पादक
जगन्नाथ

सह सम्पादक
भगवती प्रसाद द्विवेदी

प्रबन्ध
संजय कुमार

चित्रसज्जा
(श्रीमती) संगीता सिन्हा

सम्पादकीय सम्पर्क
प्रथम मंजिल, ए/21 साधनापुरी,
रोड नं०– 6 डी, गर्दनीबाग, पटना–800001

प्रकाशक
भोजपुरी साहित्य प्रतिष्ठान
प्रथम मंजिल, ए/21 साधनापुरी,
रोड नं०– 6 डी, गर्दनीबाग, पटना–800001

सहयोग–राशि

एह अंक के	:	8/–
वार्षिक	:	25/–
डाक से	:	30/–
आजीवन	:	251/–

(सहयोग–राशि सम्पादक का नाँव से सम्पादकीय सम्पर्क पर देय)

सम्पादन–संचालन :
अवैतनिक–अव्यावसायिक

एह अंक में

सम्पादक के पन्ना / 1

थाती / 2

गीत

पाण्डेय कपिल / 3

गंगा प्रसाद 'अरुण' / 4

पी. चन्द्रविनोद / 5

भगवती प्रसाद द्विवेदी / 6–7

रामेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूष' /8–9

सूर्यदेव पाठक 'पराग' / 10–11

डॉ. आसिफ रोहतासवी / 12

डॉ. तैयब हुसैन पीड़ित / 13

सतीश प्रसाद सिन्हा / 14

डॉ. विजय प्रकाश / 15

रामरक्षा मिश्र 'विमल' / 16

हीरा लाल 'हीरा' / कवर पेज 3

राधिका रंजन 'सुशील' / कवर पेज 4

रचना खातिर एकमात्र रचनाकार जिम्मेवार । भाव, विचार भा कवनो स्तर पर ओह से 'कविता' परिवार के सहमति कतई जरूरी नइखे । कवनो तरह का विवाद का स्थिति में न्यायालय क्षेत्र पटना होई ।

www.bhojpurisahityangan.com

सम्पादक के पन्ना

पच्चीस-तीस साल पहिले तक भोजपुरी काव्य में छांदिक अभिव्यक्ति के प्रमुख माध्यम गीत ही रहल, बाकिर दिनानुदिन बढ़त गजल-लेखन के प्रचलन से एकरा लेखन में परिमाणात्मक ह्रास प्रारम्भ हो गइल, जे अभी तक जारी बा । फिलवक्त, गीत कम लिखाता आ गजले ढेर । गजल लिखाउ, खूब लिखाउ, बाकिर गीतो लिखाय । गीत के आपन एगो विशिष्ट गरिमा बा । साहित्य के तीनो तत्व– भाव, भाषा आ रस (आनन्द), अइसे त, सब विधा में विद्यमान रहेल सन, बाकिर कविता में एहनी के विद्यमानता अउर सब विधा का अपेक्षा अधिक सशक्त आ सघन रूप में होला आ ओहू में गीत में त ई अपना चरम पर होल सन । भोजपुरी के काव्यात्मक विकास में सबसे अहम योगदान गीत के ही रहल बा । भोजपुरी लोकजीवन में भी गीत के का महत्व बा, सर्वविदित बा ।

समय के साथ रचनाकार के सोच में बदलाव के फलस्वरूप गीत के चरित्र में काफी परिवर्तन आ गइल बा । आज के गीतकार बहिर्मुखी पहिले बा, अन्तर्मुखी बाद में । ऊ अपना से बाहर उपलब्ध अनुभव-संसार से आपन सामग्री अपना आँतर तक ले जाता आ फेर ओकरा के अपना गीत में अभिव्यक्त कर देता । एही बाहर से भीतर आ फेर भीतर से बाहर के प्रक्रिया में ओकरा गीत के जन्म होता, रूप मिलता । आज के गीत, एक तरह से, मनुष्य के अस्तित्वगत स्थिति के उद्घाटन बा । ओकरा के पढ़ला के माने बा आदमी का जीवन के पढ़ल ।

परंपराप्रथित कथ्य अब भोजपुरी गीत से ओझल हो गइल बा, अइसन ना कहल जा सके । पारंपरिक गीत रचना अबहियों हो रहल बा, बाकिर कम । भोजपुरी गीत के मुख्य धारा समकालीन सत्य आ यथार्थ से अनुप्राणित गीतन के बा, जे साम्प्रतिक समाज आ जीवन से सीधा सरोकार राखताड़ सन, जिन्हनी में समकालीन आशा-आकांक्षा, जन-जीवन के क्षेत्र में व्याप्त विसंगति आ विद्रूपता, आधुनिक मूल्यहीनता, रिश्तन के टूटन..... मौजूदा समय अपना पूरा हकीकत के साथ मौजूद रहता ।

कथ्य के लेके एह गीतन के सराहल जा सकेला, बाकिर अधिकांश गीतन में काव्य खातिर जवना वैदग्ध्य के अपेक्षा होला, नदारत रहता । रचनाकार लोग के ध्यान एकरा ओर जाये के चाहीं ।

'कविता' के पाठक/रचनाकार लोग के 'कविता' परिवार का ओर से नया साल के हार्दिक मंगल कामना के साथ–

www.bhojpurisahityangan.com

थाती

मनोरंजन के एगो गीत

अबहूँ कुहुकिए के बोलेले कोइलिया
नाचेला मगन होके मोर
अबहूँ चमेली-बेली फूले अधिरतिया
हियरा में उठेला हिलोर
अबहूँ अँगनवाँ में खेलेला बलकवा,
कौआ मामा चिल्हिया-चिल्होर
अबहूँ चमकिए के चलेले तिरिअवा
ताकेले भुइयवें के ओर
चोरी-चोरी अब गोरी करेली कुलेलवा
चोरी-चोरी आवे चितचोर
भूल जाला सुध-बुध, काम-काज, लोक-लाज
करेले जवानी जब जोर
दुनिया के रंग-ढंग सब कुछ उहे बाटे
ओइसने बा जोर अउरी सोर
कुछुओ ना बदलल, हमहीं बदल गइलीं
बदलल तोर अउरी मोर
तब के जवान अब भइले पुरनियाँ
देहिया भइल कमजोर
याद जब आवेला पुरनका जबनवाँ
मनवाँ में होखेला ममोर
कुछ दिन अउरी धिरज धर मनवाँ
जिनगी के दिन बाटे थोर
पाकल-पाकल केसिया में लागे ना करिखवा
रामजी से करु ई निहोर

◈

(भोजपुरी : वर्ष-1, अंक-1, जुलाई, 1952 से उद्धृत)

प्रस्तुति : पाण्डेय कपिल

www.bhojpurisahityangan.com

पाण्डेय कपिल

[1]

बीत रहल बाटे उमेद के असाढ़
दिन गिनते दिन बीतल
हहरत पल-छिन बीतल
रात के कटत नइखे अन्हियारी गाढ़
निस-दिन पानी बरसे
जियरा रह-रह तरसे
झाँकी एह आँखिन में, उमड़ल बा बाढ़
ऊब-चूभ होखत मन
हहरत बाटे छन-छन
पँवरो कइसे जिनिगी, उमिर से नवाढ़

[2]

जइसे अइलऽ, ओसहीं जइतऽ, रहित न कवनो बात !
बाकिर अइलऽ तऽ अनजाने
अब आपन होके जातारऽ
साँच बनल जिनिगी में रहलऽ
अब सपना होके जातारऽ
जीत बनल रहुए जे ओह दिन, का ना रहुए मात ?
अब काहें पागल मन-पाखी
दरद भरल गाना गावत बा
आँखिन के सूनापन काहें
आँसू झर-झर बरिसावत बा
आसमान बदराइल काहें, ना ह ई बरसात !
घुप्प अन्हार भइल बा सगरो
मन मावस के रात बनल बा
जिनिगी पर ई करिया-करिया
घेरा कइसन आज तनल बा
जेह दिन चाँद बनल रहुअऽ, ऊहो त रहुए रात !

◈

3/9, इन्द्रपुरी, पटना-800024

www.bhojpurisahityangan.com

गंगा प्रसाद 'अरुण'

बोलऽ ला दीं आसमान से
तरई-सूरुज-चान धनी !
कहवाँ पाईं हम बत्तीस के
चउँसठ के खतियान धनी !

कतना सपना बोईं-काटीं
बाँटीं प्रेम सवाई
धन-यौवन सब इहें लुटाइल,
इहवें लोग-लुगाई
लागत बा, अब मिट जाई हो
कुल आपन पहिचान धनी !

कल तक सबहीं आपन लउके
ए धरती के हीरा
बाकिर अब बन गइल इहाँ पर
आड़ा-तिरिछ लकीरा
डेगे-डेगे ब्याध-अहेरी
कर में तीर-कमान धनी !

अब तक सुनत रहीं कि
सँउसे देश सहारा बाटे
एक रहीं हम, एक रहे के
नारा प्यारा बाटे
ईहे सरग सपन के आपन
प्यारा हिन्दुस्तान धनी !

जरि से कबरल गाछी अइसन
अब हम लागत बानीं
सरनागत अइसन इहवाँ पर
अब सब लागे जानीं
रहलीं ना घर के, घाटे के
हम अइसन इन्सान धनी !

◈

21-बी, रोड नं.-1, जोन-4
बिरसानगर, टेल्को, जमशेदपुर-831004

www.bhojpurisahityangan.com

पी. चन्द्रविनोद

आखर-आखर भटक रहल बा
शब्द-शब्द छितराइल
बिसराइल छाया छन्दन के
धुन के धूप हेराइल

गलियारा अर्थन के बाटे तंग
भाव-नगर में कब दो खनल सुरंग
चौराहा पर थमल पाँव बा
अभिव्यंजन बउआइल

हवा रुकल, गुमसाइल आकुल प्रान
भँवर उठल, छन-भर के भेंटल त्रान
बिन पानी सुखले पँवरेला
मन मछरी छपिटाइल

सुर बेंगन के सुन रागिनी अवाक
चन्दन-बन सूखल सेमर के धाक
हरन हो रहल चीर बोध के
बिम्ब बन्द कउआइल

◈

न्यू एफ-11, हैदराबाद कॉलोनी,
बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी, वाराणसी-5

www.bhojpurisahityangan.com

भगवती प्रसाद द्विवेदी

[1]

भँवर में नाव

आँखिन में सूखि गइल
सपन के समुंदर
साधन के भइल फीलपाँव,
गली-गली, डगर-डगर
जोहत बा मिरिगा मन
कहाँ हेराइल आपन गाँव ?

ले भागल के चोराइ
नयना के पानी
झपटि लिहल के मए हुलास,
चेहरा पर जामि गइल
झुर्रियन के झुरमुट
दम काहें तूरत हर साँस ?

अनगिन बेवाइ
ओठ पर कइसे फाटल
झुलसावे गँछियन के छाँव ।

कहाँ गइल कान्हा
आ गोपियन के मीठ रास
कहाँ गइल बंसी के तान,
माटी के सउँसे
पहिचान लीलि घललस
पक्का के मुर्दा मकान

आपन बा सभे
मगर बाँचल ना अपनापन
रिसे मए रिश्तन के घाव ।

सुनुगत बा हाड़-माँस
सुनुगेले जिनिगी
सुनुगे-धनके आ जरे लोग,
खेतन में हरियरी
आ ओठ फेफरियाइल
बिधना, ई कइसन संजोग !

उगिलेले माटी से
सोना-रूपा धरती
लाँगट नाचे तबो अभाव ।

कहाँ गइल फागुनी
फुहार ऊ रंगीला
गइल कहाँ चइता के टेर,
के बना देले बा
पनघट के मरघट-अस
मउराइल नेह के कनेर

परिपाटिन के पुरान
पाल उड़ि गइल कब
डगमगा रहल भँवर में नाव,
गली-गली, डगर-डगर
जोहत बा मिरिगा मन
कहाँ हेराइल आपन गाँव ?

◈

www.bhojpurisahityangan.com

[2]

घर-अँगना बचावे बदे

कइसे अब गीत हम रचीं
मउसम बेमार हो गइल ।
कम्पूटर बेशरम भइल
आदमियतो से छल करे,
लोहू जब जल मतिन बहे
लोग जिए भा उफर परे !
कइसे संवेदना बची
बेहया बजार हो गइल ।
भइल सुनामी बा हर लहर
कोसी के कोप हर घरी,
सँकाइल नजर बाटे जब
असरा अब बची के तरी !
बहशीपन ढा रहल कहर
नेह तार-तार हो गइल ।
डर बा जब परिछाहीं से
आँतर के बात का कहीं,
नाता में नाग के भरम
भाँपि साँच बस चुपे रहीं ।
सुख-दुख के मीठ बतकही
बासी अखबार हो गइल ।
केकरा पर ई सिंगार जी
पिया मोर जब आन्हर बा,
बिरवा का फुलाई-फरी
डाढ़े बइठल बानर बा !
निश्छल बिसवास के छलल
छलिया बैपार हो गइल ।
तबहूँ ना तजब हम रचल
अपने के रचावे बदे,
एह गँवई भूमंडल में
घर-अँगना बचावे बदे ।
आन्हीं-अन्हियार से भिड़त
कब दो भिनुसार हो गइल ।

◈

टेलीफोन भवन, आर-ब्लॉक,
पोस्ट बॉक्स 115, पटना-800001 (बिहार)

www.bhojpurisahityangan.com

रामेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूष'

[1]

आपसी लगाव गइल
बढ़त बा दुराव गइल
सीता के होत बा हरन ।
मूल्यन के हो गइल क्षरन ।

छोट-छोट बतियन पर
बड़-बड़ बा झगड़ा
दुर्बल अँजोर पर
अन्हार बाटे तगड़ा
रिस्तन के अर्थ गइल
शब्द-कोश व्यर्थ गइल
खण्ड-खण्ड भइल व्याकरन ।
मूल्यन के हो गइल क्षरन ।

नयका संस्करणन में
दर्द के प्रकाशन
करनी के कागज, बा
भरनी के भासन
लूट-पाट आम भइल
कत्ल सरेआम भइल
घरे-घर छिटात बा मरन ।
मूल्यन के हो गइल क्षरन ।

थाती लुटात बाटे
पुरुखन के साँचल्
नेह-धरम, करुना बा
कुछऊ ना बाँचल
छल के बा पाँव बढ़ल
तरकुल पर स्वार्थ चढ़ल
घिरल बा अन्हार से किरन ।
मूल्यन के हो गइल क्षरन ।

पहिरे परमार्थ के
मुखौटा अपनापन
शील के प्रचार करे
फूहड़ विज्ञापन
मनई के मान गइल
आपन पहचान गइल
बौना हो गइल आचरन ।
मूल्यन के हो गइल क्षरन ।

◈

www.bhojpurisahityangan.com

[2]

होता ई कइसन उतजोग पिया !
छूटे ना रोग पिया !
अलग-अलग खेमा में जाति, धर्म, भाषा
अलग-अलग ढंग के गढ़ाइल परिभाषा
आपस में लागत बा जोग पिया !
छूटे ना रोग पिया !
अगहर के घर बा आतंकिन के डेरा
चोर आ सिपाही के नाता मउसेरा
मिलजुल के भोगे मनभोग पिया !
छूटे ना रोग पिया !
स्वारथ के घर में बा छलिया मनसउदा
एक-एक टूटत बा मूल्य के घरउँदा
ढोंग करे योग के प्रयोग पिया !
छूटे ना रोग पिया !
पोखर पर कर्मलीन बकुलन के पहरा
मछरिन के दर्द भइल पहिले से गहरा
सुख के ना जूटे संजोग पिया !
छूटे ना रोग पिया !
साँसत में जिनिगी, बा आफत में सपना
कद के लम्बाई के राजनीति नपना
रेती पर धावत बा लोग पिया !
छूटे ना रोग पिया !

◈

शंकर भवन, सिविल लाइन्स, बड़ी बाजार कं पश्चिम, बक्सर-802101

www.bhojpurisahityangan.com

सूर्यदेव पाठक 'पराग'

[1]

समय पखेरू

समय पखेरू तेज तीर
अस भागल जाता !

लइकाईं के मौज
बान्ह के घूमल गाँती,
फेड़न पर चढ़ लुकाछिपी
आ दोल्हा-पाँती,
बरखा में भींजल
पोखर में कूदल-पँवरल
बरिसन बीतल तबहूँ
आजो कहाँ भुलाता !

लइकाईं के जाते
आइ गइल तरुणाई,
अंग-अंग थिरके लागल
लेके अँगड़ाई,
कोइलिया कूके लागल
दिल के बगिया में
सपना सुघर सहेजे
लागल रिश्ता-नाता !

कुछ सपना साकार भइल
कुछ जागत टूटल,
कुछ तकदीर दगा दिहलस
कुछ दुसमन लूटल,
आँखमिचौनी हार-जीत के
खेलत-खेलत
नाचत बानी करत
आज तक थैया-ताता

आज करत बानी
अबतक के लेखा-जोखा,
का पवलीं मेहनत से
कतना पवलीं धोखा,
देखत-देखत अतना
उमिर गुजरलीं हमहूँ
अबले जतने पवलीं
ऊहो बहुत बुझाता !

अबहूँ बा उत्साह
कलम में जोर बनल बा,
अपना पर विश्वास
अउर मेहनत के बल बा,
सत्-शिव-सुन्दर भाव रखत
बाटे 'पराग' के
इहे कामना, करस सदा
यशजोग विधाता !

◈

www.bhojpurisahityangan.com

[2]

शोर भइल

गली-मुहल्ला-चौराहा पर, सगरे शोर भइल !

दिन-दुपहरिया राहगीर
भय से बा काँप रहल,
चोर-उचक्का भरल भीड़ में
गर्दन चाँप रहल,
चोर समझ के साधो पर से अब विश्वास गइल !

टाट-बाट बाटे बड़का के
बातो मनभावन,
जइसे तलफत रेती पर
बरिसे आइल सावन,
ऊपर से उज्जर, भीतर बा बदबू अउर मइल !

खेवनहारे नाव डुबा देता
सुख-सपना के,
बाँटेवाला सभ बटोर
रख लेता अपना के,
कठिन भइल जाता केहू पर अब विश्वास कइल !

आज आदमीयत के
नाम-निशान मिटल जाता,
आज आदमी स्वारथवश
भूलल रिश्ता-नाता,
दिन में सूरुज छिपल, अन्हरिया बाटे गइल फइल !

◈

181, आवास विकास कॉलोनी-1, शाहपुर
पो.-गीतावाटिका, गोरखपुर-273006

www.bhojpurisahityangan.com

आसिफ रोहतासवी

दरकल मन, आइल दरार
फिर एगो फूटल दुआर ।
तूरि-तूरि सील बँटल
तूरि-तूरि लोढ़ा,
टूटि गइल खूँटा पर
बरधन के जोड़ा
हर-फार, हँसुआ-कुदार ।
गोइड़े के डीह बँटल
बगिया-बगइचा,
भर गाँव जान गइल
रेहन आ पइँचा
हथफेर, करजा, उधार ।
बाँचल ना माटी के
कोठा-दलानी,
दादा के हाथे के
आखिरी निसानी
खटियो ना आँटे उसार ।
दिन-पर-दिन सिकुड़त बा
महुआ के छाँह,
छँट-छँट के छवरा
पगडंडी पतराह
ताल पटल डालत पुआर ।

◈

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
पटना सायंस कॉलेज, पटना-5

www.bhojpurisahityangan.com

तैयब हुसैन 'पीड़ित'

साँस-साँस जहर भरल जा रहल
अब कइसे बचबऽ, भइए !
पहिला विद्रोह होय या फेर आजादी
तू ही मारल गइलऽ, तोहरे बरबादी
ऊ त ना लड़लन, ना मरलन, तिकड़म कइलन
जे बा गद्दी पर, जेकरा तन पर खादी
तू लगलऽ फाटल सिए !
खेत भइल करखाना, श्रम बाँचल पासे
केतनो बेचे चहबऽ, तवहूँ उपासे
करजा पर आज अउर काल्ह तक धराइल
लउकत ना कुछ बा, जिअबऽ कौना आसे ?
गिरवी तोहार जब हिए !
ईश्वर ना अइले, ना पैगम्बर अइले
गुरू सबके घूम-घूम रस्ता भटकइले
धरम बनल लोग के लड़ावे के धंधा
पोथी बिन पढ़ले सब ताख पर रखइले
बउराइल लोग बिन पिए !
अब त ए दुनिया में बहत ऊ हवा बा
तनिके कन हर सुख के ढेर-सा दवा बा
बाकी के हिस्सा में भूख-बदहवाली
पीठ पर मुसीबत आ पेट पर तवा बा
साजिश बा कातिले जिए !
साँस-साँस जहर भरल जा रहल
लड़बऽ त बचबऽ भइए !

◈

'टी॰ एच॰ ठौर', न्यू अजीमाबाद कॉलोनी,
पो॰-महेन्द्रू, पटना-800006

www.bhojpurisahityangan.com

सतीश प्रसाद सिन्हा

गीत लिखीं

गीत लिखीं, नवगीत लिखीं, हारल मन पर जीत लिखीं ।
जे हतियारा हतिया कइके छूट गइल
जे तिरिया के बेशरमी से लूट गइल
ओकर करिया करनी करुआ तीत लिखीं ।
घर कतना हर साल बाढ़ में डूब गइल
राहत के चरचा कागज पर खूब भइल
लिखीं आजु सभ, पीड़ा-भरल अतीत लिखीं ।
केहू के बा चिंता अपना गद्दी के
पागल केहू भाषाई चउहद्दी के
घर के दुशमन बनल देश के हीत, लिखीं ।
जात-धरम के केहू रोटी सेंक रहल
सीधा जन पर केहू फंदा फेंक रहल
राजनीति के कुटिल नीति के रीत लिखीं ।
डेग-डेग पर आतंकी बारूद छिपल
राहगीर के मउअत के सामान बिछल
सभकर जिनिगी आजु भइल विपरीत, लिखीं ।

◈

कल्याण विहार, अम्बेदकर पथ, बेली रोड, पटना-800014

www.bhojpurisahityangan.com

विजय प्रकाश

श्रम-पसीना के रचींजा छंद
सोच-संकुल सर्जना के गीत ।

जंगलन में हाय ! रिश्तन के
कब तलक केहू इहाँ भटके
एह बबूलन के टहनियन से
कई अँचरा रह गइल फट के

जल नदी के लाल होखत देख
अब त चेतऽ स्वप्नदर्शी मीत ।

खो गइल दिन मधुर मलयज के
आँधियन के आ गइल बा वक्त
नसन में खाली न दउड़ेला
टपक जाला आँखियो से रक्त

लुट गइल विश्वास के थाती
कठघरा में खड़ा आपन प्रीत ।

◈

मंत्रिमंडल सचिवालय (राजभाषा) विभाग,
मुख्य सचिवालय, पटना-800015, बिहार

www.bhojpurisahityangan.com

रामरक्षा मिश्र 'विमल'

फागुन के आसे
होखे लह-लह विरवाई ।

डर ना लागी
बाबा के नवकी बकुली
अङना दमकी
बबुनी के नन्हकी टिकुली
कनिया पेन्हि बिअहुती
कउआ के उचराई ।

बुढ़वो जोबन राग अलापी
ली अङड़ाई
चशमो के ऊपर
भउजी काजर लगवाई
बुनिया जइसन रसगर
हो जाई मरिचाई ।

छउकी आम बने खातिर
अकुलात टिकोरा
दुलहिन मारी आँखि
बोलाई बलम इकोरा
जिनिगी नेह भरल नदिया में
रोज नहाई ।

◈

द्वारा-बी. एन. विश्वास, 772 जी. पी. रोड, उत्तरायन
पो.-बंगाल एनामेल, जि.-24 परगना (नार्थ) पश्चिम बंगाल-743122

www.bhojpurisahityangan.com

हीरालाल 'हीरा'

बदलि गइल परिवेश

अब मुड़ेर ना कागा उचरे, ना देला संदेश
गौरइयो अँगना ना फुदुके, बदलि गइल परिवेश
शहर घेरि लिहलसि चउतरफा
बदलल जाता गाँव
सीधा-साधा गँवई जीवन
में आइल बदलाव
लूट-खसोट, ठगी-बेइमानी के घर-घर परिवेश
दुअरा पाकड़ि-निमिया सूखलि
सगरी बाग कटाइल
नावे बरियरका लोगन के
ग्राम-समाज लिखाइल
गड़हा-पोखरा खेत बनि गइल, चिरई छोड़ली देस
अदिमी के अब डँसल देखि के
विषधर बा भकुआइल
देखि कुकुरहो हमहन के
कुकुरो बाटे शरमाइल
गिद्ध-चील ले हारि मानि के, चलि गइले परदेस
सँझलवते सब घर में ढूके
डरे न झाँके बहरा
राति कटावे पारा-पारी
देइ-देइ के पहरा
गउवाँ में गउवाँ ना लउके, बदलल भाषा-भेष

◈

ग्राम-बुलापुर, पो०-सँवरूबाँध
जिला- बलिया (उ० प्र०)

www.bhojpurisahityangan.com

राधिका रंजन सुशील

बन के फँसरी डोर माला के गले अझुरा गइल
उड़ गइल खुशबू हवा में, फूल सब मुर्झा गइल

दूर तक हमरा चमन में रोशनी लउकत रहे
चीर बादल के करेजा चाँदनी छउकत रहे
आ गइल करिया घटा, फेरु बा अन्हरिया छा गइल
उड़ गइल खुशबू हवा में, फूल सब मुर्झा गइल

जिन्दगी में चैन रहुए, फिक्र कवनो ना रहे
आ मुसीबत के कतहुँओं जिक्र कवनो ना रहे
वक्त धोखाबाज ई ले के मुसीबत आ गइल
उड़ गइल खुशबू हवा में, फूल सब मुर्झा गइल

ठाट से सुख-चैन के बंशी बजावत हम रहीं
अब ऊ दिन कहवाँ गइल, केहू से हम ना कम रहीं
चैन-सुख-आराम सब चिन्ता अचानक खा गइल
उड़ गइल खुशबू हवा में, फूल सब मुर्झा गइल

◈

रजिस्ट्री रोड, सीवान

नया साल के अनमोल तोहफा

श्री भगवती प्रसाद द्विवेदी के लिखल दूगो किताब

1. जौ-जौ आगर (कविता-संग्रह) मूल्य : 125/- रुपया
2. ठेंगा (कहानी-संग्रह) मूल्य : 125/- रुपया

प्रकाशक

किताब पब्लिकेशन, मुजफ्फरपुर

'भोजपुरी साहित्य प्रतिष्ठान', साधनापुरी, गर्दनीबाग, पटना-। के ओर से स्वत्वाधिकारी जगन्नाथ द्वारा अनुकृति, साधनापुरी, गर्दनीबाग, पटना-। से कम्पोज्ड आ न्यू प्रिन्टलाइन प्रेस, पटना-। में मुद्रित ।

सम्पादक : जगन्नाथ